GOVT. DR. INDRAJEET SINGH COLLEGE, AKALTARA DISTT. JANJGIR-CHAMPA (C.G.)

Web site- www.gdiscakaltara.in//Email ID- gdiscakaltara@gmail.com//Phone- 07817-252540

College Code- 3003

PROGRAMME OUTCOMES, PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES AND COURSE OUTCOMES

हिन्दी विभाग

PROGRAM OUTCOMES

1. Realization of human values.
2. Sense of social service.
3. Responsible and dutiful citizen.
4. Critical temper.
5. Creative ability.

PROGRAM SPECIFIC OUTCOMES

1. To understand the basic concept and subject of Hindi and its origin.
2. To make or not the importance of subject Hindi and its branches.
3. To understand various aspects of Hindi literature with a process to reach method and giving new mode and direction.
4. To make a attempt in different area and theory such as vocabularies and vice versa.
5. To understand in the literature more in a border areas then Mary confined to subject.
6. To know about Hindi literature its root cause perspective and methods.

COURSE OUTCOMES

PROGRAM	COURSE	OUTCOME
एम.ए. हिन्दी प्रथम	प्रथम प्र न पत्र हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल)	विकास प्रक्रिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से देखा परखा जा सकता है। साहित्यक सृजन भीलता के विविध

सेमेस्टर		प्रवृत्तियो ं का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से किया जा सकता ळें साहित्य के इतिहास का द र्ान, आदिकाल भक्तिकाल और रीतिकाल की पृश्ठभूमि, विभिन्न काव्य धाराओं, प्रतिनिधि रचना और रचनाकार का ज्ञानर्जन होता है।
	(द्वितीय प्र न पत्र) प्राचीन काव्य विद्यापति– विद्यापति पदावली संपादक– रामवृक्ष बेनीपुरी कबीर– कबीर ग्रंथावली संपादक– डॉ. भयाम सुन्दर दास जायसी– पद्मावत संपादक– आचार्य रामचन्द्र भाुक्ल संक्षिप्त अध्ययन– अमीर खुसरो, रसखान, मीरा, रैदास, रहीम। तृतीय प्र न पत्र आधुनिक गद्य साहित्य (नाटक एवं निबंध) नाटक–1. चन्द्रगुप्त– जय ांकर प्रसाद 2. आशाढ़ का एक दिन–मोहन राके ा निबंध–1.साहित्य की महत्ता– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 2. करूणा– आचार्य रामचन्द्र भाुक्ल 3. भारतीय साहित्य की प्राण ाक्ति– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 4. चन्द्रमा मनसो जात– विद्यानिवास मिश्र 5. भोलाराम का जीव– हरि ांकर परसाई संक्षिप्त अध्ययन नाटककार–भारतेन्द्र हरि चन्द्र, डॉ.	पूर्व मध्यकालीन काव्य के लोक जागरण के नवीन स्वरसे दे ा की भावात्मक एकता एवं सांस्कृतिक परम्परा से अवगत होकर छात्र–छात्राएं समाज में फैली कुरीतियों, अंधवि वास एवं वाह्याडम्बर आदि चुनौतियों का सामना करने में समर्थ होते है। सेवा, समर्पण और त्याग की भावना छात्र–छात्राओं में विकसित होती है।उसतं काव्य धारा के नीतिपरक कविताओ ं से छात्र–छात्राओं जीवनोपयोगी ज्ञान प्राप्त होता है। आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। नाटक एवं निबंध मानव–मन एवं मस्तिश्क की अभिव्यक्ति का स ाक्त माध्यम बन गया है। आधुनिक गद्य साहित्य के माध्यम से मनुश्य का राग वराग, तर्क–वितर्क तथा चिन्तन–मनन रागात्मकता के साथ कौ ाल पूर्ण ढंग से अभिव्यंजित होता है। आधुनिक गद्य साहित्य के अध्ययन से मनुश्य की प्रकृति,परिवे ा, परिस्थिति तथा विकास प्रक्रिया को जाना जा सकता है।

	रामकुमार वर्मा, लक्ष्मीनारायण लाल, धर्मवीर भारती, जगदी ा चन्द्र माथुर निबंधकार– भारतेन्द्र हरि चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बाबू भयाम सुन्दर दास, सरदार पूर्ण सिंह, डॉ. नगेन्द्र चतुर्थ प्र न पत्र भाशा विज्ञान पाठ्य विशय– 1.भाशा और भाशा विज्ञान 2.स्वन प्रक्रिया 3. अर्थ विज्ञान	भाशा विज्ञान के अध्ययन से छात्र–छात्राओ ं में भाशिक व्यवस्था का सुस्पश्ट एवं सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त होता है। भाशा संरचना के विभिन्न स्तरों एवं विन्यास का ज्ञान प्राप्त होता है। भाशा व्यवहार का ज्ञान प्राप्त होता है।
एम.ए. हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर	प्रथम प्र न पत्र हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) पाठ्य विशय– 1. आधुनिक काल– भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग 2.स्वच्छंदता वादी चेतना छायावादी काव्य की विविध प्रवृतियां 3.हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओ ं कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध का विकास 4. रेखा चित्र, संस्मरण, यात्रा साहित्य, आत्मकथा, जीवनी और रिपोतीज का विकासखण्ड अध्ययन	जनमास की मनोवृति, द ाा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों ज्ञान संचित होता है। साहित्यिक सृजन ीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाशा–भौ लियो ं का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से किया जा सकता है।
	द्वितीय प्र न पत्र मध्यकालीन काव्य पाठ्य विशय–	मध्यकालीन काव्य के अध्ययन से समाज,संस्कृति और युग की धड़कनों को

	1.सूरदास–भ्रमर गीत सार संपादक–आचार्य रामचन्द्र भाुक्ल 2. तुलसीदास– रामचरित मानस (गीता प्रेस) सुन्दरकाण्ड (पूर्ण) 3. बिहारी रत्नाकर– बिहारी रत्नाकर– संपादक– जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर संक्षिप्त अध्ययन– धनानंद के ाव दास, देव, भूशण, पद्माकर	समग्रता से समझा जा सकता है। द ानिक पृश्ठभूमि, भक्ति भावना, लोक जीवन एवं संस्कृति एवं काव्यकला से अवगत होकर बहुज्ञता हासिल किया जा सकता है।
	तृतीय प्र न पत्र आधुनिक गद्य साहित्य (उपन्यास एवं कहानी) उपन्यास– 1. गोदान– प्रेमचंद 2. मैला आंचल–फणी वरनाथ रेणु कहानी– 1 उसने कहा था– गुलेरी 2. पुरस्कार– प्रसाद 3. मंत्र –प्रेमचंद 4. परिन्दे– निर्मल वर्मा 5. वापसी – उशा प्रियवंदा 6. बिरादरी बाहर–रांगेयराधव संक्षिप्त अध्ययन– 1.उपन्यासकार– जैनेन्द्र भगवती–– अमृतलाल नागर, मृणाल पाण्डेय 2. कहानीकार– अज्ञेय, य ापाल, राजेन्द्र अवस्थी, अमरकांत पाण्डेय,बेचन भार्मा उग्र	उपन्यास कहानी तथा विविध विधाओ ं के रूप मे ं जीवन में होने वाली समस्याओ ं की जानकारी प्राप्त कर भविश्य को उन्नत बनाने एवं सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायता मिलती है। दे ा की ऐतिहासिकता, दे ा प्रेम की भावना बलिदान एवं त्याग के आद ाों को छात्र–छात्राओं को परिचित कराकर उपन्यास एवं कहानी के कथ्य एवं ि ाल्प का आद ा स्थापित कर सकते है।
	चतुर्थ प्र न पत्र हिन्दी भाशा पाठ्य विशय– 1.हिन्दी की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि– प्राचीन भारतीय आर्य भाशाएं 2. हिन्दी का भौगोलिक विस्तार 3. हिन्दी का भाशिक स्वरूप 4. हिन्दी के विविध रूप	हिन्दी भाशा का ऐतिहासिक, विकासक्रम भौगोलिक विस्तार, भाशिक स्वरूप विविधरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओ ं विशयक जानकारी एव ं देवनागरी लिपि की वि ोशताएं, विकास और मानकीकरण का ज्ञान छात्र–छात्राओ ं के लिए बहुत उपयोगी है।

एम.ए. हिन्दी तृतीय सेमेस्टर	प्रथम प्र न पत्र भारतीय काव्य भाास्त्र पाठ्य विशय– 1.संस्कृत काव्य भाास्त्र–रस सिद्धांत 2.अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत 3.वक्रोक्ति सिद्धांत, अभिव्यंजनावाद औचित्य सिद्धांत 4.ध्वनि सिद्धांत हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियां	रचना के वैि ाश्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्य भाास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। काव्य भाास्त्र के आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की वास्तविक परख होती है। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवे ा के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने रचना को उसकी समग्रता में समझाने और परखने के लिए भारतीय काव्य ाास्त्र का ज्ञान छात्र–छात्राओं में होना आव यक है।
	द्वितीय प्र न पत्र आधुनिक काव्य पाठ्य विशय– 1.मैथली भारण गुप्त– साकेत नवम सर्ग 2.जय ांकर प्रसाद–कामायनी– चिंता, श्रद्धा, लज्जा सर्ग 3.पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– राम की भाक्ति पूजा, सरोज स्मृति कुकुरमुत्ता 4.सामान्य अध्ययन– अयोध्या सिंह उपाध्याय,हरिऔध, जगन्नाथ दास रत्नाकर, महादेवी वर्मा, हरिवं ा राय, बच्चन,त्रिलोचन भाास्त्री	आधुनिकता, वि वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृश्टिकोण आधुनिक काव्य के अध्ययन से जागृत होता है। आधुनिक काव्य में संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार विविध धाराओ ं में प्रवहमान होने स` विद्यार्थियो ं मे ं प्रेरणा औरऊर्जा तथा ज्ञान क्षितिज का विस्तार होता है।
	तृतीय प्र न पत्र प्रयोजन मूलक हिन्दी पाठ्यक्रम– 1. हिन्दी के विभिन्न रूप–सर्जनात्मक भाशा संचार भाशा, राजभाशा, माध्यम भाशा, मातृभाशा, कार्यालयी हिन्दी, पत्र लेखन, संक्षेपण,पल्लवन, टिप्पण। पारिभाशित भाब्दावली,विज्ञापन लेखन 2.कम्प्यूटर– परिचय उपयोग तथा क्षेत्र 3.अनुवाद– परिभाशा, क्षेत्र और	प्रयोजन मूलक हिन्दी के अध्ययन से सामाजिक आव यकताओ ं और जीवन–व्यवहार का ज्ञान प्राप्त होता है। इसके विविध आयामो ं से रोजगार एवं जीविका की समस्या का समाधान होता है। विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जाने वाली प्रयोजन मूलक हिन्दी जीवन के लिए उपयोगी है।

	सीमाएं 4. जनसंचार–प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियां	
	चतुर्थ प्र न पत्र भारतीय साहित्य पाठ्यक्रम– 1.भारतीय साहित्य का स्वरूप, भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं, भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब, भारतीयता का समाज ास्त्र, हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति 2.बंगला, उड़िया भाशा के साहित्य का इतिहास प्रमुख कृतिकारो ं का परिचय तथा महत्वपूर्ण कृतियां 3.तुलनात्मक अध्ययन– बंगला साहित्य, उड़िया साहित्य और हिन्दी साहित्य 4. नाटक–हृयवदन गिरी ा कर्नाड	भारतीय भाशाओ ं के साहित्य का ज्ञान स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए अपेक्षित है। भारतीय साहित्य के रूप रचना का ज्ञान होता है। भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से होती है। हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियो ं को अन्य भाशा– साहित्य से तुलनात्मक अध्ययन का ज्ञानार्जन होता है।
एम.ए. हिन्दी चतुर्थ सेमेस्टर	प्र न पत्र – प्रथम पा चात्य काव्य भाास्त्र पाठ्यक्रम– 1.प्लेटो– काव्य सिद्धांत अरस्तू– अनुकरण सिद्धांत त्रासदी विवेचन 2.लांजाइनस– उदात्त की अवधारणा– वर्ड सवर्थ– काव्य भाशा का सिद्धांत कालरिज– कल्पना सिद्धांत और ललित कल्पना 3. मैथ्यू आर्नाल्ड– आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य टी.एस. इलियट– परम्परा की परिकल्पना और वैयक्तिव प्रज्ञा निर्वेयक्तिकता का सिद्धांत वस्तु	पा चात्य विद्वानो ं के काव्य सिद्धांत विशयक चिंतन का बोध विद्यार्थियों मे ं होता है। सर्जनात्मक एवं रचनाधर्मिता में अभिवृद्धि के लिए पा चात्य काव्य भाास्त्र का ज्ञान अपेक्षित है। रचना को समग्रता में समझाने और परखने के लिए पा चात्य काव्य ास्त्र का अध्ययन समीचीन है। विभिन्न सिद्धांत एवं वाद से संबंधित जानकारी हासिल कर विद्यार्थी वै वक साहित्य जगत से रूबरू हो सकते है।

	निश्ठ समीकरण, संवेदन ीलता का असाहचर्य 4.आई.ए. रिर्चडस– रागात्मक अर्थ संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना, सिद्धांत एवं वाद– अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभित्यंजनावाद,मार्क्सवाद, मनोवि लेशणवाद तथा अस्तित्ववाद 5. लघु उत्तरीय–एवं अतिलघुत्तरीय वस्तुनिश्ठ प्र न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से किया जायेगा।	
	प्र न पत्र – द्वितीय छायावादोत्तर काव्य पाठ्य विशय– 1.सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय नदी के दीप, असाध्यवीणा, बावराअहेरी यह दीप अकेला, कलगीबाजरे की,हरीधास पर क्षणभर, अन्तः सलिला, हिरो ामा 2. गजानन माधव मुक्तिबोध– अंधेरे में 3. नागार्जुन–बादल को घिरते देखा है, सिन्दुर तिलकित भाल, बसंत की अंगवानी कोई आए तुमसे सीखे, तो फिर क्या हुआ यह तुम थी, कोयल आज बोली है अकाल और उसके बाद, भाासन की बंदूक प्रेत का बयान संक्षिप्त अध्ययन–श्रीकांत वर्मा, दुश्यंत कुमार, धूमिल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती	साहित्य के विद्यार्थियो ं को छायावादोत्तर काव्य के अध्ययनसे स्वतंत्रता के बाद की स्थिति का ज्ञान होता है। नये–नये बिम्ब, प्रतीक योजना को जानने समझने का अवसर मिलता है। आक्रो । और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित छायावादोत्तर काव्यों में हुई है, जिससे विद्यार्थी परिचित होकर साहित्यिक रूझान में अभिवृद्धि करते है। वैि वक संदर्भ की जानकारी और समझदारी के लिए छायावादोत्तर काव्य का अध्ययन आव यक है।
	प्र न पत्र – तृतीय पत्रकारिता पाठ्य विशय– 1.वि व पत्रकारिता का उदय, भारत	साहित्यिक ज्ञान के साथ–साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति की जा सकती है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक पाक्षिक, मासिक,

	मे ं पत्रकारिता का आरंभ पत्रकारिता स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव विकास 2.सम्पादन कला के सामान्य सिद्धांत समाचार के विभिन्न स्त्रोत,संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्य पद्धति,सम्पादकीय लेखन, फीचर, रिपोर्ताज साक्षात्कार, खोजी समाचार अनुवर्तन (फालोअप) आदि की प्रविधि 3. इलेक्ट्रानिक मीडिया की पत्रकारिता प्रिंट पत्रकारिता मल्टी मीडिया, पत्रकारिता का प्रबंध, मुक्त प्रेस की अवधारणा 4. लोक सम्पर्क तथा विज्ञापन, प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी, प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता, प्रजातांत्रिक व्यवस्था मे ं चतुर्थ स्तंभ के रूप मे ं पत्रकारिता का दायित्व	त्रैमासिक, अर्द्धवार्शिक, वार्शिक पत्रिकाओं, प्रिंट मीडिया, इंटरनेटइआदि में पत्रकारिता का विकंसित स्वरूप देखा जा सकता है। पत्रकारिता का अध्ययन आज की अनिवार्यता बन गई है। पत्रकारिता संबंधी कानून तथा पत्रकारिता के दात्यिव बोध की जानकारी प्राप्त की जाती है। पत्रकारिता विशयक ज्ञान, कार्य पद्धति से विद्यार्थी परिचत हो सकते है।
	प्र न पत्र– चतुर्थ लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य पाठ्य विशय– 1. लोक साहित्य, लक्षण, परिभाशा, क्षेत्र लोक और लोकवार्ता, लोक विज्ञान, लोक संस्कृति अवधारणा 2. लोक साहित्य के प्रमुख रूपो ं का सं क्षिप्त अध्ययन 3.छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास, प्रवृत्तियां छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य का उद्‌भवविकास विधाएं–अपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध कहानी, महाकाव्य 4. दानलीला–सुन्दरलाल भार्मा	लोक साहित्य सम्पदा के माध्यम से लोक व्यवहार, नीति, संस्कृति का ज्ञान विद्यार्थियो ं को कराया जाता है। इनके संकलन, सम्पादन, प्रका ान द्वारा मूल राश्ट्रीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है। लोक गीत, लोक नाट्य, लोक कथा, लोक गाथा, लोक नृत्यदतथा लोक संगीत का जीवन में अपना अलग महत्व है। इसका ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थी लोक साहित्य अवधारणा से परिचित हो सकते है।

बी. ए. प्रथम वर्श	आधार पाठ्यक्रम हिन्दी भाशा– पुस्तक का नाम– भारतीयता के अमर स्वर प्रो. धनंजय वर्मा पल्लवन, पत्राचार, अनुवाद एवं पारिभाशिक भाब्दावली, मुहावरे एवं लोको, भाब्द भुद्धि, भाब्द ज्ञान, पयार्यवाची, विलोम भाब्द, अनेकार्थी भाब्द, देवनगरी लिपि की वि ोशताएं, वर्तनी मानक रूप कम्प्यूटर में हिन्दी का अनुप्रयोग, हिन्दी में पदनाम हिन्दी अपश्ति, संक्षेपण, हिन्दी में संक्षिप्तीकरण। ईदगाह कहानी –प्रेमचंद भालेराम का जीव– हरि ांकर परसाई, ि ाकांगो से स्वामी विवेकानंद का पत्र मानक हिन्दी भाशा का अर्थ, स्वरूप– वि ोशताएं, मानक अमानक भाशा, सामाजिक गति ीलता, प्राचीनकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल।	पल्लवन, पत्राचार एवं व्याकरण की जानकारी छात्र– छात्राओ ं की दी गई। जिससे अनेक भाब्द ज्ञान की वृद्धि हुई और मानक–अमानक के द्वारा भाशा की भुद्धता का परिभजिन किया गया। अपठित गद्यां ा,संक्षिप्तीकरण एवं संक्षेश्ठ के द्वारा छात्र–छात्राओं में 'गागर में सागर भरने की' प्रवृति का विकास हुआ। ईदगाह कहानी से छात्र–छात्राओं को सम्मान, प्रेम एवं कर्तव्य निश्ठता के गुणो ं को विकसित किया गया। सामाजिक गति ीलता के माध्यम से प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक काल का परिचय दिया गया जिससे छात्रो ं में ऐतिहासिकता, मानवीयत, आदि गुणो ं को विकसित किया गया।
बी. ए. प्रथम वर्श	हिन्दी साहित्य प्रथम प्र न पत्र– प्राचीन हिन्दी काव्य– पेपर कोड डॉ. कांति कुमार जैन पाठ्यक्रम– 1. कबीर की साखियां – साखी 2.संक्षिप्त पद्मावत– नागमति का वियोग वर्णन–30 भ्रमक गीत सार, सूरदास प्रारंभिक–5 पद 4.रामचरित मानस के अयोध्या कोड प्रारंभिक 25 पद दोहे चौपाई–छंद 5.घनानंद प्रारंभिक 25 छंद–द्रुत पाठ हेतु तीन कवियों का अध्ययन–विद्यापति रहीम–रसखान	कबीर के जीवनवृत, उनके नीतिगत उपदे ाो की जानकारी छात्र–छात्राओ ं को उपलब्ध कराई गई। कबीर की साखियो के माध्यम से समाज में फैली कुरितिया, छूआछुत, अंधवि वास आदि को दूर करने की ि ाक्षा दी गई। जायसी के संक्षिप्त पद्मावत के द्वारा छात्र–छात्राओं को ऐतिहासिकता एवं आध्यात्मिकता की लौकिक एवं अलौकिक प्रेम की पराकाश्ठा प्रेम में समपर्ण की भावना जैसे गुणो ं को बताया गया। तुलसी दास के काव्य से धर्म,कर्म, नीति, त्याग एवं समर्पण की भावना का संचार किया गया। घनानंद के काव्य के द्वारा प्रेम, त्याग एवं समर्पण की भावना

	द्वितीय प्र न पत्र गबन उपन्यास प्रेमचंद– कथा साहित्य– हिन्दी कथा का विकास आका ादीप, कफन, पर्दा, ठेस, मलवे का मालिक, चीफ की दखत, बिरादरी बाहर गदल	का संचार किया गया। गबन उपन्यास के माध्ये से रि वत खोरी एवं भश्टाचार की समस्याओं से अवगत कराया गया। कथा साहित्य की कहानियों के द्वारा कर्ज की समस्या, बाह्य ओज्वर एवं सामाजिक बुराईयो ं स` दूर रहने की ि ाक्षा प्रदान की गई।
बी. ए. द्वितीय	हिन्दी साहित्य प्रथम प्र न पत्र– अर्वाचीन हिन्दी काव्य (पेपर कोड– 0173) पाठ्यक्रम– 1. मैथली ारण गुप्त– भारत भारती की कविताएं 2.सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– सखि बसंत आया, वर दे वीणा वादिनी, हिन्दी के सुमनों के प्रति पत्र तोड़ती पत्थर, राजे ने अपनी रखवाली की। 3. सुमित्रानंदन पंत– बादल, परिवर्तन–2 पद, ताज झंझा में नीम, भारत भारती 4. माखनलाल चतुर्वेदी– नि ास्त्र सेनानी, बलि पंथी से उलाहना, सांझ और ढोलक की थापें, मैं बेच रही हूॅ दही। 5. अज्ञेय– सबेरे उठा तो धूप खिली थी, साम्राज्ञी का नैवेद्यदान, घर, चांदनी जी लो, दूर्वाचल। द्रुतपाठ– 1. अध्योध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध 2. सुभद्रा कुमारी चौहान 3. श्रीकांत वर्मा	अर्वाचीन हिन्दी काव्य का अध्ययन आधुनिकता की समस्त वि ोशताओं को समेटे हुए है। साहित्य की विकास यात्रा, आधुनिक भाव बोध का ज्ञान छात्र–छात्राओं को होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की भाव, भाशा ि ाल्प की जानकारी प्राप्त होती है। राश्ट्रीयता एवं राश्ट्रप्रेम की भावना, त्याग, बलिदान की भावना जागृत करने में राश्ट्रीय काव्य धारा की कविताएं सक्षम है। छायावादी,प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी अनुचिंतन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।
	हिन्दी साहित्य	अंधेर नगरी के माध्यम से भारतेन्दु

	द्वितीय प्र न पत्र हिन्दी निबंध तथा अन्य गद्य विधाएं पेपर कोड 0174 पाठ्यक्रम– नाटक– अंधेर नगरी–भारतेन्दु हरि चंद्र निबंध– क्रोध– आचार्य रामचंद्र भाुक्ल बसंत– डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी उस अमराई ने राम–राम कही है। डॉ. विद्यानिवास मिश्र काव्येशु नाट्यम रम्यम– बाबू गुलाबराय बेईमानी की परत– परसाई एकांकी– औरंगजेबकी आखिरी रात डॉ. रामकुमार वर्मा स्ट्राईक– भुवने वर एक दिन– लक्ष्मीनारायण मिश्र दस हजार– उदय ंकर भट्ठ मम्मी ठकुराईन–डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्रुतपाठ– राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, हबीब तनवीर	हरि चन्द्र जी ने ब्रिटि ा भाासन की अव्यवस्था अत्याचार, रि वतखोरी और भाोशण को प्रतीकात्मक रूप मे ं प्रस्तुत किया है। वैचारिक निबंध ललित निबंध तथा व्यंग्य विधा की जानकारी प्राप्त होती है। भारतीय ग्राम्य परिवे ा में अमराई की महत्ता और उसकी धीरे–धीरे नश्ट होती संस्कृति की ओर ध्यान आकृ ट किया गया है। पाठ्य एकांकी के माध्यम से जीवन न वरता, विक्षिप्त मानसिक स्थिति, आधुनिक मानव जीवन की पद्धति, कृपणता, स्वाभिमान संस्कृति अज्ञानता आदि केलाक्षणिकता एवं व्यंग्य से समझाने का प्रयास किया गया है जो कि विद्यार्थियो ं के ज्ञानवर्धन में सहायक है।
बी.ए., बी. एस.सी. /बी.कॉम, द्वितीय–	आपा हिन्दी भाशा पेपर कोड–0171 इकाई 1. चोरी और प्रायि चत– महात्मा गांधी कायालयीन भाशा, मीडिया की भाशा इकाई 2. युवको ं का समाज मे ं स्थान– आचार्य नरेन्द्र देव– वित्त एवं वाणिज्य की भाशा म ीनी भाशा इकाई 3. मातृभूमि–वासुदेव ारण अग्रवाल संज्ञा, सर्वनाम, वि ोशण, क्रिया वि ोशण इकाई 4. डॉ. खूबचंद बघेल हरिठाकुर/समास– संधि इकाई 5. संभाशण कु ालता– पं.	सुप्रसिद्ध लेख के माध्यम से समाज एवं राश्ट्रहित के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास होता है। व्याकरणिक एवं भाशा विशयक पाठ्यक्रम के माध्यम से हिन्दी भाशा संबंधित ज्ञान में अभिवृद्धि होती है। प्रतियोगी परीक्षाओं की दृश्ठि से ज्ञानार्जन होता है। भाशा की संरचना का ज्ञान होता है।

	माधव राम सप्रे अनुवाद अंग्रेजी से हिन्दी मे ं अनुवाद संक्षिप्तियां	
बी. ए. तृतीय वर्श	हिन्दी साहित्य– प्रथम प्र न पत्र– जनपदीय भाशा– साहित्य (छत्तीसगढ़ी) पाठ्य विशय 1. भूमिका (अ) छत्तीसगढ़ी साहित्य की विकास यात्रा (ब) छत्तीसगढ़ी भाशा एक परिचय 2. संत धर्मदास के पद 3. सोनपान निबंध 4. सीख–सीख के गोठ 5. विनय पाठक (छत्तीसगढ़ी कविता) 6. मुकुन्द कौ ाल (छत्तीसगढ़ी गजल) द्रुतपाठ 1.सुन्दरलाल भार्मा 2. रामचन्द्र दे ामुख 3. कपिलनाथ क यप	जनपदीय भाशा छत्तीसगढ़ी निरन्तर विकास की ओर अग्रसर हो रही है, अस्तु इस भाशा का और इसमे ं रचित साहिल का इतिहास विकास स्पश्ट करते, इनसे संबंधित प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्मक अनु ीलन करना हिन्दी के वृहन्त हित में होगा। छत्तीसगढ़, अंचल के विविध स्वरूप, ऐतिहासिक पृश्ठभूमि, सांस्कृतिक स्थिति एवं, लोक–जीवन की वि ाश्टताओ ं का रेखांकन, जनपदीय भाशा छत्तीसगढ़ी के अध्ययनकर्ता के भीतर एक रस का संचार करती है। लोक संस्कृति एवं लोक जीवन, की वर्तमान में प्रासंगिकता तो है ही यह भविश्य के लिए मार्गद िक की भूमिका का भी निर्वाह करता है।
बी. ए. तृतीय वर्श	हिन्दी साहित्य– (द्वितीय प्र न–पत्र) हिन्दी भाशा–साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन पाठ्य विशय– (क) हिन्दी भाशा का स्वरूप विकास– 1. बोलचाल की भाशा 2. रचनात्मक भाशा 3. राश्ट्रभाशा 4. राज भाशा 5. सम्पर्क भाशा 6 संचार भाशा हिन्दी का भाब्द भण्डार– तत्स्म, तद्म दे ा आगत भाब्दावली। (ख) हिन्दी– साहित्य का इतिहास (ग) काव्यांग– काव्य का स्वरूप एवं प्रयोजन। रस, छंद, अलंकार	हिन्दी भाशा का इतिहास जितना प्राचीन है, उतना ही गूढ़ गहन भी। इसमें रचित साहित्य ने लगभग डेढ़ हजार वर्शो का इतिहास पूरा कर लिया है। इसलिए हिन्दी भाशा और साहित्य के ऐतिहासिक विवेचन की बड़ी आव यकता है। इसी के साथ–साथ हिन्दी ने अपना जो स्वतंत्र साहित्य भाास्त्र निर्मित किया है, उसे भी रूपायित करने की आव यकता है। इसके संज्ञान द्वारा विद्यार्थी की मर्मग्राहिणी प्रतिभा का विकास होगा और ऐतिहासिक प्ररिप्रेक्ष्य में भाुद्ध साहित्यिक विवेक का सन्निवे ा होगा।
बी. ए., बी.	आधार पाठ्यक्रम– हिन्दी भाशा	राश्ट्रीय भाव बोध, को जागृत करने में

कॉम, बी. एस.सी. तृतीय वर्श	पाठ्य विशय– भारतमाता– पंत, पर ुराम की प्रतीक्षा– दिनकर, बहुत बड़ा सवाल– मोहन राके ा, संस्कृति और राश्ट्रीय एकीकरण–योगे ा अटल –कथन की भौलिया –विकास ील दे ों की समस्यायें –विभिन्न संरचानायें –आधुनिक तकनीकी सम्यायें –कार्यालयीन पत्र और आलेख –जनसंख्या –अनुवाद –ऊर्जा और भाक्तिमानता का अर्थ ाास्त्र –घटनाओं, समारोहो आदि का प्रतिवेदन और विभिन्न प्रकार के निमंत्रण–पत्र	सक्षम, संस्कृति, परम्परा के साथ–साथ सम–सामयिक समस्याओ ं को सामने लाकर, समाधान परख बुद्धि के विकास में पाठ्य– विशय सहायक है। इसके अतिरिक्त व्याकरण पक्ष पर भी ध्यानाकृश्ट करके हिन्दी के भाुद्धि– लेखन को प्रोत्साहित किया गया है।